ISSN - 2229-3620
UGC CARE LISTED JOURNAL
WIS

शोध संचार बुलेटिन

January-March, 2021
Vol. 11, Issue 41
Page Nos. 244-247

AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक रुचि के मध्य संबंध का अध्ययन

डॉ0 भूपेन्द्र कौर*
मो0 शहरोज आलम**

शोध सारांश

शैशव अवस्था से लेकर वृद्धा अवस्था तक किसी न किसी रुप में मानव शिक्षा प्राप्त करता है। यह व्यक्ति के जीवन को उन्नत एवं सभ्य बनाती है तथा व्यक्ति के जीवन को आनन्ददायक बनाने तथा सामाजिक कल्याण में सहयोग देने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है। शिक्षा ही वह महत्वपूर्ण साधन है जिससे समाज में शीघ्रगामी विकास, अच्छे मूल्यों का संचार, सामाजिक न्याय व अवसरों की समानता प्राप्त करने में सहायता मिलती है। इसके माध्यम से ही एक बालक का सर्वांगीण विकास सम्भव है यह पूरी तरह नये और अवसर के अनुकूल एक नये समाज को स्थापित करने में सक्षम है। भारतीय सभ्यता और संस्कृति कों उन्नतशील बनायें रखने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है, प्रत्येक राष्ट्र अपनी संस्कृति, विचारधारा और परम्परा को इसके द्वारा सतत् प्रभावित रखता है, अर्थात् शिक्षा के द्वारा ही आचार, विचार, मान्यतायें, प्रथायें, अधिकारों व कर्तव्यों का ज्ञान बालक प्राप्त करता है, जो विद्यालय के सुन्दर वातावरण में ही प्राप्त किये जा सकते हैं। मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शहरी मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण एवं रूचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण एवं रूचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विज्ञान वर्ग की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण एवं रूचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कला वर्ग की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण एवं रूचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

Keywords : माध्यमिक विद्यालय, पारिवारिक वातावरण, शैक्षिक रुचि

1. प्रस्तावना

परिवार को एक बालक की प्रथम पाठशाला माना जाता है एवं विद्यालय जाने से पूर्व बालक की पाठशाला उसका घर ही होता है और उसकी पहली अध्यापिका उसकी माता होती है। इस विद्यालय रूपी परिवार में बालक का विकास तब प्रारम्भ हो जाता है जब बालक, विद्यालयी वातावरण में प्रवेश करता है यह विकास अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि बालक के विकास में पारिवारिक वातावरण की अहम् भूमिका होती है। शिक्षा में पारिवारिक वातावरण के महत्व को स्वीकार करते हुये प्रख्यात् मनोवैज्ञानिक **जॉन लॉक** ने कहा है जब कोई बालक पैदा होता है तो उसका मस्तिष्क कोरी पटिया के समान होता है। जैसे–जैसे वातावरण का प्रभाव उस पर पड़ता है उसकी मस्तिष्क रूपी पटिया ज्ञान से अंकित होती जाती है और उसके ऊपर उसके पारिवारिक वातावरण का प्रभाव दिखाई देने लगता है। एक व्यक्ति का पूरा जीवन सम्भवतः परिवार में ही व्यतीत होता है। परिवार वह प्रारम्भिक अवस्था है, जो बालक के व्यवहार को नियन्त्रित करने का प्रयास करता है। परिवार स्नेह, अनुशासन इत्यादि के माध्यम से अपने परिवार के अन्य सदस्यों के व्यवहार को भी नियन्त्रित करता है तथा उसका सर्वांगींण विकास करता है। अगर पारिवारिक वातावरण स्वच्छ होगा तो बालक का विकास भी उचित दिशा में होगा। अगर पारिवारिक वातावरण स्वच्छ नहीं है तो बालक के उचित विकास की बात करना बेमानी है, सामान्यतः देखा जा सकता है कि स्वच्छ वातावरण में पले बढ़े बालक ऊँचे पदों पर पहुँचते हैं और गन्दे पारिवारिक वातावरण के बालक अपराधी प्रवृत्ति के होते हैं। जिस प्रकार का परिवार का वातावरण होता है उसी प्रकार का विकास बालक का होता है। मुस्लिम वातावरण में पलने वाला बालक मुस्लिम संस्कृति और धार्मिक क्रियाकलापों को अपनाता है जबकि गैर मुस्लिम परिवार का बालक जिस प्रकार के सामाजिक सांस्कृतिक वातावरण में रहता है उसी प्रकार के सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्रियाकलापों

*सहायक प्रोफेसर – शिक्षक प्रशिक्षण विभाग, आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद
**शोधार्थी – शिक्षक प्रशिक्षण विभाग, आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद

को अपनाता है उसी प्रकार उसका विकास भी होता है। पारिवारिक वातावरण का एक मुस्लिम छात्राओं के जीवन में अत्यन्त महत्व होता है। एक व्यावसायिक पारिवारिक वातावरण का बालक व्यवसाय में रूचि रखता है जबकि एक नौकरशाह परिवार के वातावरण में पलने वाला बालक नौकरशाही को अपनाता है। इससे सिद्ध होता है कि जिस प्रकार का परिवार का वातावरण होगा उसी प्रकार का बालक का विकास होगा है। यह परिवार का वातावरण ही छात्राओं की रूचि को प्रभावित करता है। जिस बालक का पारिवारिक वातावरण दूषित होता है, अधिकांशतः उन परिवारों के बालक अपराध की ओर उन्मुख हो जाते हैं। किशोरावस्था को तूफान व तमाम उतार चढ़ाव की आयु माना जाता है। इस समय विद्यार्थियों को समाज और परिवार में समायोजन करना बहुत कठिन हो जाता है। कुछ अशिक्षित मुस्लिम परिवार विद्यार्थियों के विकास को समझने में असमर्थ रहते हैं और उचित मार्गदर्शन न मिलने से मुस्लिम छात्राऐं परिवार व समाज में समायोजन नहीं कर पाती हैं जिससे उनको कुंठा व तनाव जैसी मनोदैहिक बीमारियां जकड़ लेती है जिनका प्रभाव बालक के अध्ययन पर पड़ता है। जब मुस्लिम छात्राओं को समायोजन मे कठिनाई होती है तो उनकी रूचि पर भी प्रभाव पड़ता है अगर एक छात्रा की रूचि इंजीनियर बनने की है और उसको पर्याप्त सुविधायें व उचित पारिवारिक वातावरण नहीं मिलता है तो उसकी रूचि, आकांक्षा का स्तर एवं शैक्षिक निष्पत्ति प्रभावित होती है। अगर पारिवारिक वातावरण स्वच्छ नहीं है तो बालिकाओं के व्यक्तित्व एवं रूचि उपलब्धि प्रभावित होते हैं और छात्राऐं रूचि के विरूद्ध व्यवसाय चुनता है जिससे उसकी योग्यता को सही दिशा नहीं मिलती है, और मुस्लिम छात्राओं को रूचि विरूद्ध व्यवसाय से ही समझौता करना पड़ता है।

2. आवश्यकता एवं महत्व

मुस्लिम समाज में शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार ने अनेक संवैधानिक अधिकार प्रदान किये हैं तथा धारा 15, 17, 25 व 30 तथा नीति निर्देशक सिद्धान्त 330, 339 व 380 तथा 1A के अनुसार उनके हितों की रक्षा की गई है। इन धाराओं व नीति निर्देशक तत्वों के क्रम में अनेक कार्यक्रम आयोजित किये गये तथा संस्थानों की स्थापना की गई, जिसके तहत सन् 1978 ई0 में राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग की स्थापना की गई, जिसे 1993 ई0 में संवैधानिक दर्जा प्रदान किया गया। मौलाना आज़ाद एजुकेशन फाउन्डेशन की स्थापना अल्पसंख्यक वर्ग के शैक्षिक व सामाजिक उत्थान के सरोकार के लिए की गई, जो अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह छात्राओं की शिक्षा में योगदान हेतु आवासीय विद्यालयों की स्थापना में सहयोग प्रदान कर रचनात्मक कार्य कर रहा है। यह गैर सरकारी संगठनों को भी आर्थिक सहयोग संस्थान एम0ए0ई0एफ0 की स्थापना की गई। भारत का संविधान केवल नियमों व कानूनो का ही संकलन मात्र नहीं है, अपितु इसमें राष्ट्र की आत्मा के भी दर्शन होते है। कुछ मुस्लिम परिवार का पारिवारिक वातावरण धार्मिक कट्टरता एवं अशिक्षा के कारण बहुत अच्छा नहीं माना जाता है। जिस कारण उनका स्तर गैर मुस्लिम समुदाय के बालकों से भिन्न रहता है। कुछ मुस्लिम परिवारों का पारिवारिक वातावरण अच्छा नहीं माना जाता है जिस कारण परिवार में अध्ययनशील छात्राओं की रूचि प्रभावित होती है। मुस्लिम छात्राओं की अच्छी बुद्धि लब्धि होने के बाबजूद कभी–कभी मुस्लिम छात्राऐं शैक्षिक पिछड़ेपन के शिकार हो जाती हैं। इसका मुख्य कारण मुस्लिम छात्राओं को पारिवारिक वातावरण, जो मुस्लिम छात्राओं की रूचि को प्रभावित करता है। कभी–कभी विद्यालय का स्वच्छ वातावरण मुस्लिम छात्राओं पर अपना सकारात्मक प्रभाव नहीं छोड़ पाता है, क्योंकि मुस्लिम छात्राओं के परिवार का वातावरण उनके विकास में बाधा पहुँचाता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन के माध्यम से मुरादाबाद जनपद में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं के पारिवारिक वातावरण का रुचि पर प्रभाव को जानने का प्रयास है।

3. सम्बन्धित शोध साहित्य अध्ययन

अग्रवाल, आर. (2003), सैंगर दीपा (2003), शर्मा, नीलम (2004), खातून मुबीना सैयादा (2014), मित्तल, शर्मा एवं श्रीवास्तव (2015), रजा नेहा व दूबे चन्द्र (2016)

4. समस्या कथन

''माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक रुचि के मध्य संबंध का अध्ययन''

5. शोध अध्ययन के उद्देश्य

- मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शहरी मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण एवं रूचि का अध्ययन।
- मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण एवं रूचि का अध्ययन।
- मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विज्ञान वर्ग की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण एवं रूचि का अध्ययन।
- मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कला वर्ग की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण एवं रूचि का अध्ययन।

6. शोध अध्ययन की परिकल्पनायें

- मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शहरी मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण एवं रूचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है।
- मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण एवं

रूचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है।

- मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विज्ञान वर्ग की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण एवं रूचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है।
- मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कला वर्ग की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण एवं रूचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है।

7. न्यादर्श :–

वर्तमान शोध हेतु 500 मुस्लिम बालिकाओं को शामिल किया गया है।

8. शोध विधि :–

प्रस्तुत शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

9. उपकरण :–

पारिवारिक वातावरण – डॉ0 करुणा शंकर मिश्र।

शैक्षिक रुचि – डॉ0 एस0पी0 कुलश्रेष्ठ।

तालिका संख्या – 1

मुरादाबाद के माध्यमिक स्कूलों मे पढ़ने वाली मुस्लिम छात्राओं की पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक रुचि की स्थिति

मुस्लिम बालिकायें	संख्या	सहसम्बन्ध	सहसबन्ध स्तर
शहरी	300	0.163	धनात्मक
ग्रामीण	200	0.180	धनात्मक
विज्ञान	250	0.004	धनात्मक
कला	250	0.101	धनात्मक

व्याख्या –

तालिका में मुस्लिम छात्राओं के परिवार के वातावरण का लड़कियों की शैक्षिक रूचि पर प्रभाव को दर्शाया गया है। शहरी क्षेत्रों में रहने वाली मुस्लिम लड़कियों का दोनो चरों के मध्य सहसम्बन्ध का मान 0.163 प्राप्त हुआ है।

प्राप्त सहसम्बन्ध का मान धनात्मक सहसम्बन्ध का प्रतीक है जो दर्शाता है कि घर के अन्य सदस्यों द्वारा जो कार्य अपनाया जाता है अधिकांश लड़कियाँ उसी क्षेत्र में अपनी रूचि को आगे बढ़ाती है।

तालिका में मुस्लिम छात्राओं के परिवार के वातावरण का लड़कियों की शैक्षिक रूचि पर प्रभाव को दर्शाया गया है। ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली मुस्लिम लड़कियों का दोनो चरों के मध्य सहसम्बन्ध का मान 0.180 प्राप्त हुआ है।

प्राप्त सहसम्बन्ध का मान धनात्मक सहसम्बन्ध का प्रतीक है जो दर्शाता है कि घर में अलग अलग परिवार के सदस्य द्वारा अधिकांश क्षेत्र में जो लोग नौकरी करते है जैसे पाँच भाइयों में तीन का शिक्षक होना यही छात्राओं की रूचि शिक्षिका बनने की पैदा करता है।

तालिका में मुस्लिम छात्राओं के परिवार के वातावरण का लड़कियों की शैक्षिक रूचि पर प्रभाव को दर्शाया गया है। विज्ञान वर्ग की मुस्लिम लड़कियों का दोनो चरों के मध्य सहसम्बन्ध का मान 0.004 प्राप्त हुआ है।

प्राप्त सहसम्बन्ध का मान धनात्मक सहसम्बन्ध का प्रतीक है जो दर्शाता है कि परिवार के वातावरण का प्रभाव छात्राओं के रूचि को प्रभावित करता है जैसे किसी मुस्लिम छात्रा के माता पिता डाक्टर है तो वह लड़की हाईस्कूल के बाद ही नीट की तैयारी में जुट जाती है जो उसकी रूचि को प्रभावित करती है।

तालिका में मुस्लिम छात्राओं के परिवार के वातावरण का लड़कियों की शैक्षिक रूचि पर प्रभाव को दर्शाया गया है। कला वर्ग की मुस्लिम लड़कियों का दोनो चरों के मध्य सहसम्बन्ध का मान 0.101 प्राप्त हुआ है।

प्राप्त सहसम्बन्ध का मान धनात्मक सहसम्बन्ध का प्रतीक है जो दर्शाता है कि घर के लोगो द्वारा जो व्यापार या व्यवसाय किया जाता है भावी छात्राओं द्वारा भी उसको कभी–कभी अपना लिया जाता है।

10. निष्कर्ष

- मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शहरी मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण एवं रूचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।
- मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण एवं रूचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।
- मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विज्ञान वर्ग की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण एवं रूचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।
- मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कला वर्ग की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण एवं रूचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

सन्दर्भ :–

1. अमरचन्द (2004) – ''माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की व्यावसायिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन'', पी–एच0डी0 (शिक्षाशास्त्र), राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।
2. आनन्द, एस0पी0 (1971) – ''ए स्टडी ऑफ टीचर – प्यूपिल रिलेशनशिप इन हायर सेकेण्डरी स्कूल्स इन देहली,'' पी–एच0डी0 (ऐजू0) देहली यूनि0 देहली।
3. ओंसिकर, प्रतिभा – ''स्टडी द जॉव सैटिसफैक्शन अमंग टीचर्स वार्किग इन गर्वनमेंट एण्ड प्राईवेट सेकेण्डरी स्कूल्स'' दि प्रोग्रेस ऑफ एजुकेशनल, XXI(3), 50–53, इंडियन एजुकेशनल एब्सट्रेक्ट, 4, जनवरी 1998.
4. कुमार, एस. (2007) – ''अनुसूचित जाति एवं समान्य जाति के किशोर वर्ग के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का शैक्षिक निष्पत्ति, बुद्धि, स्मृति तथा आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन'' शोध प्रबन्ध (शिक्षा शास्त्र) एम0 जे0 पी0 रुहेलखण्ड बरेली।
5. खन्ना, एम. (1980) – ''जूनियर हाई स्कूल के विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर और उनकी शैक्षिक सफलता के बीच सम्बन्ध का अध्ययन'' पी–एच.डी. (शिक्षाशास्त्र) सरदार बल्लभ भाई पटेल विश्वविद्यालय

❐❐❐